अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष: 2, अंक: 11

मार्च 2025

जीवन निर्माण के सूत्र

विचार शुद्धि और आचार शुद्धि

वर्ष : 2 अंक : 11

मार्च 2025

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

अणुव्रत को जीवन में उतारकर व्यक्ति स्वयं सुख-शांति का जीवन जी सकता है और एक शांतिपूर्ण समाज के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। आज के हिंसक एवं भोगवादी माहौल में अणुव्रत संयम आधारित जीवनशैली प्रस्तुत करता है जिसकी पूरे विश्व को आवश्यकता है।

- नीतीश कुमार

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

अणुव्रत की अपरिहार्यता

अणुव्रत मानवता का मौलिक दर्शन है। यह एक सर्वसमावेशी दर्शन है, इसे जाति, धर्म या संप्रदाय की सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता। यह सर्वकालिक दर्शन है जिसे युगीन सीमाओं में भी नहीं बाँधा जा सकता है...और इसीलिए, अणुव्रत अपरिहार्य है। किसी भी युग में अणुव्रत की अपरिहार्यता को खारिज नहीं किया जा सकता।

20वीं सदी के पूर्वार्ध में आचार्य तुलसी ने महावीर के संयम दर्शन की महत्ता को समझते हुए उसे 'अणुव्रत दर्शन' के रूप में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया था। उन्होंने अणुव्रत दर्शन को धर्म-सम्प्रदाय की पहचान से मुक्त कर इसे सर्वजन सुलभ बना दिया। यही कारण था कि बिना किसी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण, वर्ग या लिंग भेद के सभी ने इसकी महत्ता को स्वीकारा।

अणुव्रत का दर्शन छोटे-छोटे व्रतों के माध्यम से संयम को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। संयम जब स्वभाव बन जाता है तब वह जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है और हर परिस्थिति में संतुलन साधने की शक्ति प्रदान करता है।

1 मार्च 2025 को अणुव्रत आन्दोलन ने अपना 77वाँ स्थापना दिवस मनाया। अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में आचार्य महाश्रमण का सुचिन्तित मार्गदर्शन व सबल आशीर्वाद इसे प्राप्त है। अणुव्रत कार्यकर्ताओं की विशाल टीम मानव कल्याण के इस मिशन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत है। अणुव्रत दर्शन अधिक से अधिक लोगों के जीवन का अंग बने और यह दुनिया अधिक अहिंसक, प्रामाणिक, न्यायप्रिय व सद्भावी बन सके, यही मंगलकामना है।

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

व्रत की परंपरा आगे बढ़े

■ आचार्य महाप्रज्ञ

व्रत साधना-लभ्य आत्मस्थिति है। विकार का हेतु होने पर भी आत्मा विकृत न बने, परिस्थिति का कुयोग होने पर भी गुण दोष रूप में न बदले, उस आत्म-स्थिति का नाम व्रत है।

आज फिर से जंगली या असामाजिक जीवन बिताने की तैयारी समाज के पास नहीं है। समाज से दूर भागकर ऋजुता, सच्चाई और सौजन्य को पाने के लिए समाज तैयार नहीं है। इस स्थिति में हमारे पास व्यक्ति की भलाई का साधन एकमात्र व्रत ही बचता है। व्रत का कवच पहन व्यक्ति भौतिक आकर्षण से बचे, इसके लिए प्रचार भी आवश्यक है। मैथ्यू अर्नाल्ड की भाषा में - समाज अपनी गति से आगे नहीं बढ़ सकता। उसे थोड़े-से लोग जबरदस्ती आगे ढकेलते हैं और ये थोड़े-से लोग उन कतिपय व्यक्तियों से प्रेरणा पाते हैं, जो श्रेष्ठ ज्ञानी हैं; जिनमें सूझ, साहस और शक्ति है। प्रचार के पीछे अपना स्वार्थ हो तो वह बुरा भी हो सकता है। हितलक्षी प्रचार बुरा नहीं होता। प्रकाश की चर्या भी अन्धकार के लिए विघ्न नहीं है, ऐसा हम कैसे कहें?

अणुव्रत का प्रचार श्रद्धा-जागरण का प्रचार है। श्रद्धा का परिपाक ही व्रत में बदल जाता है। व्रत लेते समय उसका संकल्प लिया जाता है। व्रत का परिपाक दीर्घकालीन साधना से होता है। व्रत की पहली भूमिका है श्रद्धा का जागरण, बीच की है स्थिरीकरण और अन्तिम है आत्म-रमण।

अणुव्रत अनुशास्ता के शब्दों में - सहज श्रद्धा के लिए आंदोलन जरूरी नहीं किन्तु श्रद्धा को जगाने के लिए

आन्दोलन अवश्य चाहिए। शब्द की दृष्टि से यह अणुव्रतों का आन्दोलन है। भावना की दृष्टि से यह श्रद्धा-जागरण का आन्दोलन है। व्रत का स्थान दूसरा है, पहले श्रद्धा का है। हृदय श्रद्धा से बदलता है, व्रत से नहीं।

जो अहिंसा का प्रचार करेगा, वह उसकी पृष्ठभूमि और उसके परिणाम का भी प्रचार करेगा। मनुष्य मनुष्य समान है - यह दृष्टि तो स्पष्ट है ही, किन्तु अहिंसा के प्रचारक को यह समझना होगा कि आत्मा आत्मा समान है। अहिंसा की पृष्ठभूमि है आत्मौपम्य - यह जीवन समान है। उसे समझे बिना अहिंसा का मर्म समझा ही नहीं जाता। किन्तु सुखी रहने के लिए या समाज का सभ्य बने रहने के लिए ही कोई व्यक्ति अहिंसा या सत्य का व्रती बनता है तो वह बहुत छोटी बात होगी। उसे अहिंसा या सत्य का व्रती कहने की अपेक्षा अहिंसा और सत्य का स्वार्थी कहें तो अच्छा होगा।

प्रश्न व्रत की भूमिका का

महात्मा भगवानदीनजी के अनुसार- जहाँ मनुष्य में यह विश्वास पैदा हुआ कि वह समाज का सभ्य हुए बिना सुखी रह ही नहीं सकता, अपनी उन्नति कर ही नहीं सकता, अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता, उसे समाज का सभ्य बनकर रहना ही होगा, वहाँ वह अपने आप समाज के प्रति सत्यव्रती बन जाता है। व्रत लेना नहीं पड़ता, उसका सत्य अपने आप व्रत का रूप ले बैठता है। इस विचारधारा में व्रत कहाँ है, यह कोरा स्वार्थ है। व्रत की कल्पना केवल स्वार्थ-पूर्ति ही हो तो भले ही उसे व्रती कहा जाये, हमारी नम्र धारणा में व्रत की भूमिका इससे ऊँची है। व्रत आत्म-संयम से आते हैं, आत्म-विकास के लिए संकल्पपूर्वक स्वीकार किये जाते हैं, इसलिए वे सामाजिक सुविधा-असुविधा से बनते-बिगड़ते नहीं। हो सकता है, कहीं-कहीं समाज का अनुकूल या प्रतिकूल वातावरण उनके बनने-बिगड़ने में निमित्त बन जाये।

व्रत व्यक्ति का निजी 'स्व' है। वह बलात् नहीं होता, स्वेच्छा से किया जाता है। व्रत कोई बाहरी वस्तु नहीं, वह इच्छा और आचरण का नियमन है। व्यक्ति में इच्छा पैदा होती है और आचरण में उसकी अभिव्यक्ति होती है।

व्रत है स्वाधीन संकल्प

सामूहिक सुख-सुविधा की उपलब्धि के लिए जो सत्य और अहिंसा का विकास होगा, वह सीमित होगा। जिस समूह से सुख-सुविधा उपलब्ध होती है, वहाँ अहिंसा और सत्य का व्यवहार होगा। जहाँ राह नहीं मिलती, वहाँ हिंसा और असत्य का विकास होगा। इस भूमिका में अहिंसा और सत्य का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रहता। यह तो निरा परिस्थितिवाद है।

व्रत व्यक्ति का निजी 'स्व' है। वह बलात् नहीं होता, स्वेच्छा से किया जाता है। व्रत कोई बाहरी वस्तु नहीं, वह इच्छा और आचरण का नियमन है। व्यक्ति में इच्छा पैदा होती है और आचरण में उसकी अभिव्यक्ति होती है। वह आचरण, जिससे आत्मा का विकास रुके, न किया जाये और उसकी इच्छा भी मिट जाये, वैसा अभ्यास किया जाये - यही है व्रत। पराधीनता से आदमी कोई काम नहीं करता। वह व्रत नहीं, वह भोग की अप्राप्ति है। व्रत है - भोग-त्याग का स्वाधीन संकल्प और अभ्यास।

पूजा नहीं, अभ्यास करें

अणुव्रत आन्दोलन व्रत की पूजा का आन्दोलन नहीं है। उसमें आदि से अंत तक व्रतों के अभ्यास की ही चर्चा है। जो लोग व्रत की आराधना न कर केवल उसकी पूजा में ही श्रेय समझने लगे हैं, उनके लिए यह आन्दोलन चुनौती बन गया है।

असत्य से आत्मा में मोह बढ़ता है, इसलिए वह अधर्म है और सत्य से उसमें प्रकाश आता है, इसलिए वह धर्म है। असत्य या सत्य बोलना - यह स्थूल बात है। व्रत वह है, जिससे असत्य बोलने का मोह जो है, यह मिट जाये। यह साधना अकेलेपन में भी मूल्यवान है और समाज में भी। भौतिक हानि-लाभ सच और झूठ दोनों से हो सकते हैं। उनके आधार पर इन्हें धर्म और अधर्म मानने की असंगति नहीं होनी चाहिए। उन्हें इनके स्वतंत्र गुण-दोष से ही आँकना चाहिए।

अर्थशास्त्र का नियम है - रुपये से रुपया आता है। नीतिशास्त्र का नियम है - आचरण से आचरण आता है। प्रचार की सीमा भी यही होनी चाहिए कि व्रती मनुष्य पैदा हों। उनसे व्रत की परम्परा आगे बढ़े। किन्तु जो लोग व्रत का नाम तक नहीं जानते, जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को नहीं समझते, उनकी हित-दृष्टि को ध्यान में रखकर व्रत का प्रचार किया जाये, वह समाज का हित-पक्ष है।

अणुव्रत आंदोलन सज्जन आदमी बनाने का एक आंदोलन है : अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के उद्‌गार सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

मितव्ययिता की अब कौन परवाह करता है!

राजेन्द्र बोड़ा, जयपुर

भारत विलासिता के नये युग में प्रवेश कर रहा है। इस युग की बाजार के कंधों पर टिकी अर्थव्यवस्था में मितव्ययिता के लिए कोई स्थान नहीं है। लोग जितना ज्यादा खर्च करेंगे, उतना बाजार रोशन होगा। बाजार रोशन होगा तो देश की अर्थव्यवस्था ऊँची होगी। भारत विश्व की पाँचवीं अर्थव्यवस्था बनने के बाद तीसरे पायदान पर पहुँचना चाहता है जिसके लिए बाजार में और अधिक पैसा आना चाहिए। लोग खूब कमाएं और खूब खर्च करें। पैसों की बचत करने का जमाना गया। फिजूलखर्ची न करने या मितव्ययिता की अब कोई सीख भी नहीं देता।

अब समय दूसरा है। समाज में अब दिखावे का आलम है। शादी-ब्याह के भव्य आयोजन को छोड़ भी दें तो मध्यम वर्ग के लोग भी अपने बच्चों के जन्मदिन होटलों में मनाने में गर्व महसूस करते हैं। एक घर में पार्क करने की जगह नहीं होने पर भी परिवार के हर सदस्य के पास चार पहिया वाहन होना चाहिए।

दरअसल विकास का नया आर्थिक मॉडल वैश्विक नव-उदारवादी व्यवस्था का प्रमुख घटक है। इसका आर्थिक तर्क उपभोक्ताओं की अतृप्त इच्छाओं को बढ़ावा देने पर टिका हुआ है। आज के युग में, इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आकांक्षी जीवनशैली को बढ़ावा देते हैं, भौतिक संग्रह को सामान्य बात बताते हैं और सफलता तथा खुशी की सामाजिक धारणाओं को नये सिरे से परिभाषित करते हैं।

आधुनिक सभ्यता में रहने के बावजूद महात्मा गांधी जैसे दूरदर्शी मनीषियों ने इसे बहुत पहले से ही देख लिया था। वे जानते थे कि निरंतर उपभोग का लोकाचार अपरिहार्य रूप से एक 'संस्कृति उद्योग' में परिणत होता है, जो 'झूठी आवश्यकताओं' का निर्माण करता रहता है। इसीलिए गांधी ने आधुनिकता को 'आध्यात्मिक' बनाने के लिए प्रेरित किया।

स्वतंत्रता के बाद भारत के मुख्यधारा के अधिकांश सैद्धांतिक अर्थशास्त्रियों ने महात्मा गांधी के विचारों में कोई विशेष रुचि नहीं दिखायी। मुख्यधारा के अर्थशास्त्री पूरी तरह गांधी के आर्थिक सूत्रों के प्रति उदासीन रहे। गांधीवादी अर्थशास्त्र अधिकतर विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों का हिस्सा नहीं बना।

गांधी की दृष्टि आज भी आधुनिकता के विमर्श को एक नया मोड़ दे सकती है क्योंकि वह हमें उस संतुलन को बहाल करने में सक्षम बना सकती है जिसे हमने आधुनिकीकरण के उन्मादी तकनीकी मॉडल को अपनाते हुए खो दिया है। हमारी आधुनिकता को एक नयी सैद्धांतिकी की आवश्यकता है जो उन्माद पर सवाल उठाती हो। बहुतों को अब लगने लगा है कि आज दुनिया जिस संघर्ष और तनाव का सामना कर रही है, उसे देखते हुए अगर धरती पर मानव को चैन से जीवित रहना है तो गांधीवादी तरीका ही श्रेष्ठ रास्ता है।

गांधी ने पूँजीपति वर्ग के लिए 'ट्रस्टीशिप' की अवधारणा की वकालत की थी, जिनसे उन्होंने अपेक्षा की थी कि वे अपने संयंत्र और मशीनरी तथा अपनी संपत्ति का उपयोग आम तौर पर अपने निजी उपयोग के लिए नहीं, बल्कि सार्वजनिक उद्देश्य और आम जनता की भलाई के लिए करेंगे। गांधी का ट्रस्टीशिप का विचार अपनाया गया होता तो आज जैसी विलासिता और फिजूलखर्ची चारों ओर पसरी नजर आती है, वह शायद वैसी नहीं होती।

काव्य-सुधा

उजले दिन का ताना बाना

■ डॉ. पूनम गुजरानी, सूरत ■

उजले दिन का ताना बाना
सौंप सकें अगली पीढ़ी को।

करें नष्ट बारूदी हलचल
शुद्ध करें पीने वाला जल
झंझावात में खो ना जाये
उनका आने वाला कल
आशीर्वाद का एक खजाना
सौंप सकें अगली पीढ़ी को
उजले दिन का ताना बाना....।

संग विरासत लेकर जाएं
दूर देश को जाने वाले
हल्दी, केसर, गुड़ का हलवा
विश्व पटल पर करें हवाले
रिश्तों का इक राग सुहाना
सौंप सकें अगली पीढ़ी को
उजले दिन का ताना बाना....।

नैतिकता की पौध उगाकर
जज्बातों के जलज खिलाएं
पुरखों के इतिहास की थाती
उस पर स्वर्णिम जिल्द चढ़ाएं
अक्षर अक्षर संस्कारों का
सौंप सकें अगली पीढ़ी को
उजले दिन का ताना बाना....।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

भ्रष्टाचार का जिम्मेदार कौन?

डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल

कभी सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत में आज सबसे बड़ी समस्या के रूप में भ्रष्टाचार अपनी जड़ें फैला चुका है। आमजन ने यह स्वीकार कर लिया है कि बिना घूस दिये कोई काम नहीं हो सकता। घूस को सुविधा शुल्क कहा जाने लगा है और इसे एक प्रकार की सामाजिक स्वीकृति भी मिल चुकी है। हर काम के दर एवं प्रतिशत निर्धारित हैं, सभी की हिस्सेदारी तय है।

भ्रष्टाचार की असली वजह है सरकारी कर्मचारियों का बेईमान होना। ऐसे कर्मचारियों का जिनके कार्यों का सीधा संबंध जनता से जुड़ा होता है। जनता के अधिकतर जरूरी काम तभी होते हैं जब सरकार के कार्यालय से उनको हरी झंडी मिल जाती है। सभी जानते हैं कि किसी भी कार्य में विघ्न डालना या किसी के प्रोजेक्ट या आवेदन को ठंडे बस्ते में डाल देना संबद्ध अधिकारी के बाएं हाथ का खेल है, और वे विघ्न डालते भी हैं। उस विघ्न से निपटने के लिए जनता सबसे आसान रास्ता अपनाती है, हरे-हरे नोट चढ़ाकर अधिकारियों से पीछा छुड़ाती है।

हम देखते हैं कि जितने भी बड़े-बड़े घोटाले, रिश्वत के मामले सामने आते हैं, उनमें सरकारी विभाग शामिल रहे हैं। निविदा में न्यूनतम दर में हेराफेरी करना, व्यावसायिक, गैर व्यावसायिक वाहनों में सक्षम अधिकारी द्वारा कमियाँ निकालना उनके लिए बड़ा ही आसान काम है। डॉक्टर मरीजों से, पुलिस अपनी चाल में फँसी जनता से किस तरह व्यवहार करती है, सभी जानते हैं। अदालतों में भी न्याय की खरीद-फरोख्त किसी से छिपी नहीं है। नगर

पालिकाएं, नगर निगम, बिजली, पानी विभाग, टोल टैक्स नाके आदि ऐसे गंभीर मुद्दे हैं, जिनसे अब जनता भी त्रस्त नहीं दिखती, वह भी इसकी अभ्यस्त हो चुकी है।

कारण भ्रष्टाचार का जो पिता है 'लालच', इससे जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं। सभी जानते हैं कि अकूत महत्वाकांक्षाएं जो मेहनत की कमाई से कभी पूरी नहीं हो सकतीं, इसके लिए अतिरिक्त कमाई की आवश्यकता होती है और भ्रष्टाचार ही इसका एकमात्र उपाय है। रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, भाई-भतीजावाद ये सभी भ्रष्टाचार के वंशज हैं जिन्होंने समाज में संक्रमित रोग को जन्म दिया है।

सबसे कड़वा सच यह है कि सरकारी कारकून भी हम ही हैं और नागरिक भी हम। हम ही अवसर मिलने पर दूसरों की मजबूरी का फायदा उठाते हैं। घूस लेना-देना साधारण-सी बात समझी जाती है। लोगों के दिमाग में यह बात घर कर चुकी है कि बिना घूस दिये कोई काम नहीं हो सकता और घूस के बल पर कोई भी काम करवाया जा सकता है। फिर ऐसे भ्रष्टाचारी को जहाँ दंड का भागी होना चाहिए, वे अवैध तरीकों से कमाई सम्पत्ति की बदौलत थोड़े ही समय में अपनी जाति में, समुदाय में प्रतिष्ठित समझे जाने लगते हैं।

इन सबकी एक बड़ी वजह देश को सही नेतृत्व का न मिलना है। हम देख रहे हैं कि योग्यता मोहताज है; अयोग्य सिफारिश और रिश्वत से पदासीन है। हर आम-ओ-खास का अपनी सुविधा को सबसे पहले स्थान पर रखना, नियमों की अनदेखी, धैर्य का अभाव, पारदर्शिता की कमी, व्यक्तिगत स्वार्थ, मूल्यों में गिरावट एवं नैतिकता में ह्रास...। फिर भला भ्रष्टाचार का बाजार कैसे गर्म न हो?

हकीकत से सभी परिचित हैं कि जब भ्रष्टाचार का केक कटता है तो सारे सरकारी विभागों में बँटता है और विभाग चलते हैं नागरिक से, अत: भ्रष्टाचार के लिए सरकार और नागरिक दोनों ही जिम्मेदार हैं।

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2024-25

वरीयता सूची

प्रथम स्थान (प्राप्तांक 100%)

अनुवा भूरा
नोखा

हर्षा सांड
कालू

करिश्मा बाफना
श्रीडूंगरगढ़

मंजु लूनिया
फरीदाबाद

मनोज मरोठी
नोखा

नीतू पालगोता
हुबली

रिद्धि धाड़ेवाल
काठमांडु

सरोज बाफना
श्रीडूंगरगढ़

सोनू बोथरा
नोखा

सुमन चोपड़ा
लूणकरणसर

वर्षा नाहटा
दिल्ली

विभा आंचलिया
नोखा

सुनिता नाहटा
भिवानी

आरती धाड़ेवाल
काठमांडु

राजकुमारी मरोठी
नोखा

द्वितीय स्थान (प्राप्तांक 97%)

दिव्या जैन
लूणकरणसर

कमलेश जैन
तोशाम

वर्षा दुगड़
अहमदाबाद

आरती जैन
भिवानी

संतोष बांठिया
हनुमानगढ़

तृतीय स्थान (प्राप्तांक 94%)

बबीता संचेती
राजलदेसर

भारती जैन
सिलीगुड़ी

ज्योति बरड़िया
राजलदेसर

लता गुप्ता
पंचकुला

ममता कुण्डलिया
राजलदेसर

मोना बड़ोला
बारडोली

मोनिका मालू
श्रीडूंगरगढ़

संजु बुच्चा
गाजियाबाद

शालिनी बड़ोला
बारडोली

सुशील सामसुखा
कोलकाता

उर्मिला सांड
कालू

वंदना सुराणा
मदनगंज-किशनगढ़

विजयश्री लालाणी
जलगांव

:: प्रायोजक ::

सुरेशराज–जसकंवर–जितेन्द्र–पारूल सुराणा, दिल्ली–जोधपुर

नशामुक्त हो देश

सुशील तिवारी, बहराइच

नशा चेतना के उस आयाम को कहते हैं जो किसी बाह्य अभिकारक से क्षणिक उद्वेलित होता है, जिस पर नशा करने वाले का कोई वश नहीं होता। नशे से व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक क्षति होती है। पूरा समाज प्रभावित होता है।

नशा शरीर में रासायनिक परिवर्तन के साथ विवेक को मार देता है। विवेक नष्ट हो जाने पर व्यक्ति पशुतुल्य आचरण करता है। आज सभ्य समाज में अपराध की वृत्ति इतनी अधिक बढ़ गयी है, उनमें से 80 प्रतिशत से अधिक मामलों के लिए नशा उत्तरदायी है। कठोर-से-कठोर कानून के प्रावधान के बाद भी इन घटनाओं में कमी नहीं आ पाती है। 90 प्रतिशत से अधिक सड़क दुर्घटनाएं नशे की हालत में होती हैं।

कई लोग अपनी कमाई का अधिकांश भाग नशे को समर्पित कर देते हैं। बच्चे भूख से तड़पते हैं, मगर उन्हें दिखायी नहीं देता। शराब का सेवन करने वाले कई घातक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। आये दिन समाचार पत्रों में खबरें छपती हैं कि जहरीली शराब से दर्जनों लोगों की जान चली गयी। किशोरों और युवाओं में बहुधा शराब और सिगरेट पीने की आदत फिल्मों के अनुकरण से आती है।

कुछ प्रांतों में पूर्णतया शराबबंदी लागू कर दी गयी, तो चोर रास्ते से महँगी शराब बिकने लगी। ऐसे में आवश्यक है कि जन आंदोलन चलाये जाएं, लोगों को जागरूक किया जाये। नशा उन्मूलन का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है आत्म-संयम। जिस दिन यह देश नशामुक्त होगा, उस दिन यह हमारे महापुरुषों का कल्पित देश होगा। आइए, हम नशामुक्त भारत अभियान के सहयोगी बनें।

वस्त्रों की रंगत

मीरा जैन, उज्जैन

गंगा आते ही चरण स्पर्श कर माथे पर गुलाल का टीका लगाती हुई बोली-''मैडम जी! होली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।''

''सदा सुखी रहो।'' यह कहते हुए उपहार-स्वरूप 50 रुपये का नोट भी गंगा के हाथ में रख दिया।

उनके जाते ही सुकृति गंगा को देख अंदर ही अंदर बेहद व्यथित हो गयी थी। अगले दिन जैसे ही गंगा काम पर आयी, सुकृति ने आव देखा न ताव, बरस पड़ी - गंगा ! मैंने तुझे इतना अच्छा सलवार सूट इसलिए दिया था कि तू आराम से इसे साल भर पहनेगी और तूने तो उसे पहनकर होली ही खेल ली। कहाँ मैंने तो गठरी से निकालकर अपना पुराना सूट पहना और तू रईस...''

सुकृति का गुस्सा देख गंगा सहम गयी। आँसुओं पर लगाम लगा हौले से बोली-''मैडम जी! मुझे माफ कर दीजिए। मैंने उसे ठीक तरह से धोकर साफ कर लिया है। अभी तो उसे मैं साल भर से भी ज्यादा पहनूँगी। वह सूट मुझे बहुत पसंद है।''

''पसंद है, तो तूने होली के दिन ही क्यों पहना? किसे दिखाना था तुझे?''

''मैडम जी ! किसी को कुछ भी नहीं दिखाना था, इसीलिए तो आप वाला सूट पहना। दरअसल हमारे मोहल्ले में होली पर कपड़ों की खींचतान तक हो जाती है। बाकी मेरे सारे सूट काफी पुराने हैं। उनके कपड़े गलने के कगार पर हैं।''

गंगा का स्पष्टीकरण सुन सुकृति को उसकी सौम्य सोच व चरित्र के समक्ष अपना सूट बहुत फीका लगने लगा। उसने एक और सूट अलमारी से निकाला और गंगा को दे दिया।

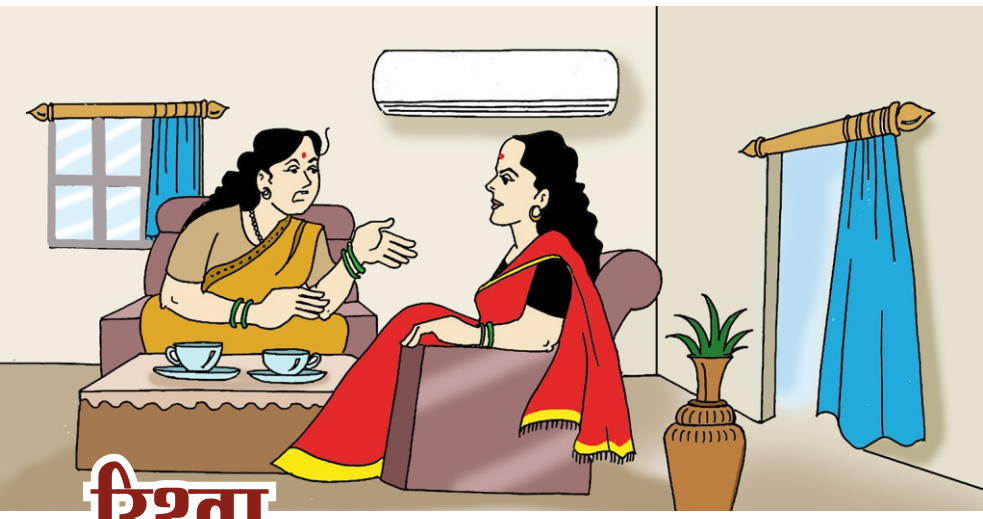

रिश्ता

निर्मला डोसी, मुंबई

''हेलो अमिता! शाम को आ रही हो न? विनोद जी को भी जरूर साथ लाना।''

''क्या बात है सरला!''

''सभी परिचित-दोस्त मिलकर बैठेंगे। हाँ, खास बात जरूर है और वह आने पर ही जान पाओगी।''

सरला मेरी पड़ोसी है और गहरी सहेली भी। सरला की बेटी गुंजन की सगाई हुए चार-पाँच महीने हो गये। अगले महीने शादी है। होने वाले दामाद का नाम राहुल है। वह जब दिल्ली से आया था तो सरला ने उसे सबसे मिलवाया था। सजीले राहुल और गुंजन की जोड़ी भी ऐसी लगी जैसे एक-दूसरे के लिए बने हों। गुंजन ने इसी वर्ष एमए किया है। अब पीएचडी कर रही है। राहुल अपने परिवार के व्यवसाय में लगा है। दोनों ही परिवार खासे संपन्न हैं।

शाम को सरला के यहाँ गयी तो वहाँ पार्टी जैसी गहमा-गहमी नहीं थी। बाहर लॉन में कुर्सियां रखी जा रही थीं। धीरे-धीरे लोग आने लगे। मैंने ध्यान से सरला का चेहरा देखा। वहाँ खुशी की कोई चमक नहीं थी तो उदासी के बादल भी नहीं थे। रंजीत भी सामान्य ही लगे। गुंजन भी

सभी से बड़े सलीके से बोल-बतिया रही थी। अंदर से वॉयस रिकॉर्डर लाकर लॉन के बीचोबीच रखी टेबल पर रखा गया तो किसी ने पूछा-''भाई यह क्यों?'' तो रंजीत ने हाथ के इशारे से कुछ देर रुकने का कहा।

सब आ गये तो सरला ने खड़े होकर कहा-''दोस्तो, आप सभी को याद होगा हम गुंजन की सगाई पर एकत्रित हुए थे। होने वाले दामाद राहुल तथा अपने समधी-समधन से आप सभी को मिलवाया था। शादी जैसे पवित्र बंधन के वक्त अग्नि की साक्षी के साथ समाज के चार लोगों की उपस्थिति भी जरूरी होती है। आज हमने एक निर्णय लिया है और उसके लिए भी आप लोगों की सहमति जरूरी है। पहले ध्यान से कुछ सुनिए, फिर हम आज के आयोजन की वजह बताएंगे।''

रिकॉर्डर शुरू कर दिया गया। दो आवाजें गूँजने लगीं। फोन पर होने वाली बातचीत लग रही थी।

''हैलो गुंजन! कल फोन किया था। तुम नहीं थी। ''

''बाहर गयी थी।''

''कहाँ...? शॉपिंग करने...?''

''नहीं, लाइब्रेरी गयी थी। रिसर्च से संबंधित प्रोजेक्ट पर काम करके सबमिट करना है, उसी की तैयारी...।''

***

''हैलो, कैसी हो गुंजन!''

''ठीक हूँ।''

''अच्छा बताओ, तुम्हें कौन-सा रंग पसंद है?''

''सभी रंग...।''

''अरे यार ...सभी से क्या मतलब?''

''मैंने तो कभी इस तरह सोचा ही नहीं।''

''कमाल है, अच्छा बताओ गाड़ी कौन-सी पसंद है तुम्हें? मेरा मतलब है लैंडरोवर, जगुवार, ईनोवा?''

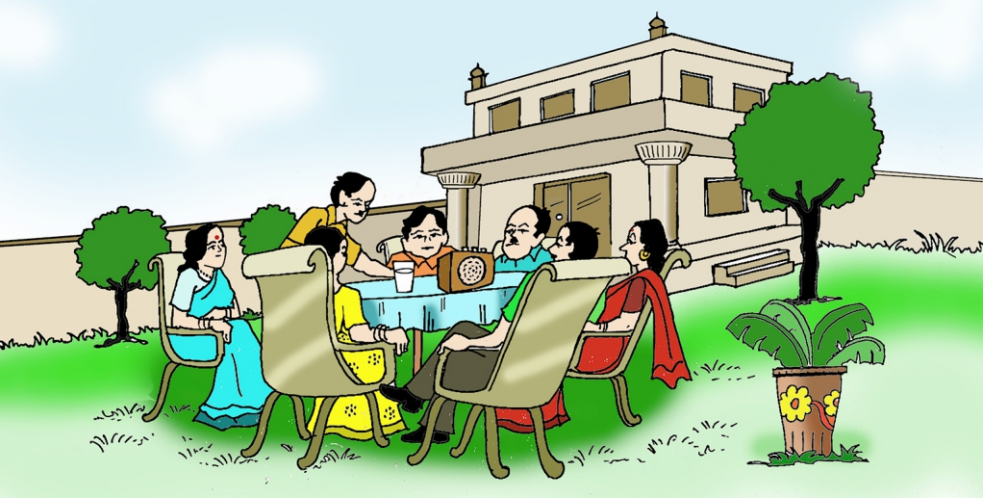

''सभी अच्छी हैं...क्या फर्क पड़ता है। बैठना ही तो है।''

''तुम अजीब हो यार...अच्छा यह बताओ तुम कौन-सी ले रही हो? मेरा मतलब है हमें कौन-सी लेनी चाहिए? मुझे लगता है मर्सिडीज-बीएमडब्ल्यू का कोई जवाब नहीं है।''

''मैं... कौन-सी गाड़ी... किसलिए ...पता नहीं...।''

इसके साथ ही रंजीत ने टेप रिकॉर्डर को स्विच ऑफ कर दिया और बोले-''दोस्तो! सगाई होने के बाद पिछले चार-पाँच महीने से राहुल-गुंजन की फोन पर बातचीत होती रही है। आप भी सोच रहे होंगे कि हमने अपनी ही बेटी के फोन को टेप क्यों किया और आप सभी को क्यों सुनाया? दरअसल हम एक दोराहे पर खड़े हैं। इस तरह की बातों के और भी टेप भरे हैं। यह तो नमूना भर है। अब जबकि हमें सामने वाले पक्ष की प्रकृति का जायजा मिल चुका है तो हमने तय किया है कि जिस तरह आप सभी की उपस्थिति में हम इस रिश्ते के लिए वचनबद्ध हुए थे, वैसे ही आज सार्वजनिक रूप से वचन भंग कर दें।''

रंजीत ने वहाँ बैठे लोगों पर एक नजर डाली और अपनी बात जारी रखते हुए कहा,''हम किसी दुर्भावनावश ऐसा नहीं कर रहे हैं दोस्तो! गुंजन के स्वभाव से और उसकी रुचियों से आप सब परिचित हैं। लेकिन राहुल के मन में इन सब बातों के लिए कोई स्थान ही नहीं है। वह तो बस गाड़ी, घड़ी, ज्वैलरी, ब्रांड... इनसे बाहर कुछ सोच ही नहीं पाता। आप बताएं कि हमारे निर्णय से आप सहमत हैं या

नहीं? अभी एकाध घंटे बाद राहुल और उसके माता-पिता आने वाले हैं।''

तकरीबन सभी की सम्मति यही थी। एक-दो लोगों ने पूछा भी कि राहुल के माता-पिता का भी क्या यही रुख है और क्या उन्हें सारे प्रकरण की जानकारी है? तब सरला ने बताया,''हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि उसके माता-पिता का नजरिया क्या है? हो सकता है वे राहुल जितने बेसब्र न हों, लेकिन अपने बेटे की ख्वाहिशों और उसकी अपरिपक्व मानसिकता के लिए कुछ जिम्मेदार तो वे भी हैं। राहुल के स्वभाव और व्यवहार से उनके घर के माहौल को समझा जा सकता है। आखिरकार गुंजन को समूचा जीवन राहुल के साथ बिताना है। उस लड़के के साथ हम अपनी बेटी को हरगिज नहीं बाँध सकते जिसके साथ वह खुश नहीं रह सके।''

थोड़ी देर में राहुल और उसके माता-पिता आ गये। उनके चेहरे दमक रहे थे। स्वागत की औपचारिकता तथा खान-पान के बाद रंजीत ने कहा-''सम्माननीय अतिथियो एवं दोस्तो! कृपया शांत रहकर कुछ सुनें।'' वही टेप फिर से बजने लगा। राहुल और उसके माता-पिता के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। राहुल पहलू बदल रहा था। उसके माता-पिता के चेहरे भी शर्मिंदगी से बेनूर हुए जा रहे थे। पाँच मिनट के बाद टेप बंद कर दिया गया।

रंजीत बोले,''अग्रवाल साहब! हम किसी पर दोषारोपण नहीं कर रहे। आज के संक्रमण काल में बाजारवाद का शिकंजा फैला हुआ है और उसके नतीजे यही होने थे। साधन संपन्नता आदमी के लिए होती है, मगर यदि आदमी उसके लिए होने लगे तो स्थिति चिंताजनक हो जाती है। मुझे संतोष है कि राहुल के स्वभाव की जानकारी हमें समय रहते मिल गयी। मैं यह नहीं कहता कि वह अच्छा है या बुरा, किंतु मेरी बेटी के साथ उसका तालमेल नहीं बैठ सकता, यह तय है। आप मुझे क्षमा करें। मुझे अपना वचनभंग करने का कोई अफसोस नहीं है।''

***

अगले दिन दोपहर में सरला आयी मेरे पास। मुझे उसका इंतजार भी था। हम दोनों के बीच कभी कोई पर्दा रहा नहीं। आते ही उसने पूछा-''अमिता, क्या कर रही हो?''

''तुम्हारा इंतजार... आओ बैठो।''

''पिछले तीन महीने बड़े तनाव में गुजरे। एक बार जब नतीजे पर पहुँच गये तो सारा तनाव बह गया। कल सब कुछ निर्विघ्न निपट गया। अब गहरी मानसिक शांति-सुकून का एहसास हो रहा है।''

''सरला, तुम लोगों का कदम कुछ नाटकीय तो लगा, मगर था बिल्कुल सही।''

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

वृक्ष हमारे पालक हैं

■ शैलेन्द्र सरस्वती, बीकानेर ■

वृक्ष हमारे मित्र युगों से,
वृक्ष हमारे पालक हैं।
फल, आश्रय और औषधि,
दे रहे मौन-साधक हैं।

शुद्ध हवा के श्रेष्ठ स्रोत हैं,
शत्रु पवन-प्रदूषण के।
धरती पर हेतु हैं ये ही,
जीवन के अंकुरण के।
इनसे ही आशीषें ले कर,
शीतल होता पावक है।

वृक्षों ने कभी मोल न माँगा,
दे कर सेवाएं अनमोल।
मानव ने पर लोभ से इनको,
काट किया विकृत भूगोल।
पृथ्वी पर मंडराती तब से,
विपदाएं कितनी घातक हैं।

आओ, वृक्ष लगा कर अपनी,
हम मानव त्रुटि सुधारें।
लुप्त हो रहा स्वर्ग जो अपना,
उसे धरा पर पुनः उतारें।
तप-रत ये मौन ऋषि ही,
धरती के उद्धारक हैं।

एफआईआर

प्रगति त्रिपाठी, बेंगलुरु

दर्द से कराहती आशा अपने जख्म सहला रही थी। तभी ऑफिस के उनके सहयोगी मिश्रा जी आये। घर खुला देखकर मैडम के कमरे में पहुँचे तो उनकी स्थिति देखकर अचंभित रह गये। पूछा-''आपकी यह हालत किसने की? आपको किसने मारा? झूठ मत बोलिएगा।''

''र..रूपेश... मेरे पति।''

''आपका तो उनसे तलाक हो चुका है...फिर आप क्यों सहन कर रही हैं? आपकी एक कम्प्लेन से वह आदमी जिंदगी भर जेल में चक्की पीसेगा। लगता है आप भूल चुकी हैं कि आप इस शहर की एसपी हैं।'' मिश्रा जी ने आशा के पद और ताकत की याद दिलाते हुए कहा।

''एसपी हूँ, इसीलिए तो चुप हूँ।''

''मतलब?''

''मीडिया में जब ये बात फैलेगी तो लोगों का मुझ पर से विश्वास उठ जाएगा। वे क्या सोचेंगे? जिनसे वे न्याय की आस लगाये बैठे हैं, वह खुद घरेलू हिंसा की शिकार हैं।''

''यह तो आपने सोच लिया लेकिन आपने यह नहीं सोचा कि आप अपने बच्चों और समाज को कितना गलत संदेश दे रही हैं। कल को पलक बिटिया के साथ ऐसा...।''

''नहीं...नहीं... ऐसा कुछ नहीं होगा पलक के साथ।'' जैसे नींद से जागते हुए आशा बोल उठीं।

''आप अभी कम्प्लेन लिखिए।'' मिश्रा जी को पेपर और पेन थमाते हुए बोलीं - ''आरोपी-रूपेश महतो, शिकायतकर्ता - एसपी आशा महतो।''

कैसी है हमारी बैलेंस शीट?

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

आकलन से ही परिष्कार संभव

क्या खोया और क्या पाया - ये दोनों जीवन की सहोदर स्थितियां हैं। इनका आकलन ईमानदार आत्मावलोकन से ही संभव है। इससे हम जान पाते हैं कि क्या हम अपनी भूलों से कुछ सीख पाये? हालाँकि अपनी कमियों को देखना और सुधारना इतना आसान नहीं होता। फिर भी अपनी क्षमताओं और कमजोरियों का आकलन करके अपना परिष्कार करना जरूरी है।

- **डॉ. इन्दु गुप्ता**, फरीदाबाद

शिक्षण से सृजन तक मेरी बैलेंस शीट

मेरा जन्म गाँव के एक गरीब परिवार में हुआ। विज्ञान विषय में स्नातक एवं शिक्षा में स्नातक की पढ़ाई पूरी होने के एक वर्ष के भीतर ही द्वितीय श्रेणी शिक्षक के रूप में कार्य करने का अवसर मिल गया। प्रभु कृपा से पदोन्नतियां होती रहीं और संयुक्त शिक्षा निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हो गया। बच्चे पढ़-लिख कर सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं। मुझे राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक सम्मान भी प्राप्त हुए और अब साहित्य के क्षेत्र में भी सम्मान प्राप्त हो रहे हैं। यही मेरी बैलेंस शीट है।

- **पारस चन्द जैन**, देवली

बदलाव से शांति एवं सुकून की प्राप्ति

किशोरावस्था में मेरे कई कर्म मुझे परेशान कर रहे थे। यथा - दूसरों को शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर पीड़ा देना, झूठ बोलना आदि। मैंने एक दिन अपने गाँव के ही कुछ बच्चों को ट्यूशन देनी शुरू की। इसके बाद मैं धीरे-धीरे नकारात्मक कारकों से दूर हो गया। मेरा जीवन शांति एवं सुकून से भरने लगा। खुद में किया गया यह बदलाव प्रेरणा का स्रोत बन गया।

- **महाशिवेष भास्कर**, समस्तीपुर

मेरे अनुभव ही मेरी संपत्ति

पिछले वर्ष मैंने अपने जीवन की बैलेंस शीट को संवारने के लिए कई प्रयास किये। लेखन कार्य की शुरुआत की। योग की कक्षाओं में भाग लेकर मैंने मानसिक और शारीरिक संतुलन बनाना सीखा। हालाँकि इसे निरंतर जारी नहीं रख पाने का मलाल है। मैंने अपने बच्चों के जीवन में खुशियाँ भरने की हरसंभव कोशिश की। मेरे प्रयास और अनुभव मेरे जीवन की संपत्ति हैं।

- **संगीता बैद**, गुवाहाटी

अणुव्रत से सुधर रही बैलेंस शीट

अणुव्रत ऐसा प्रकल्प है जो हमारे वर्तमान को भी सुरक्षित करता है और भविष्य को भी। छोटे-छोटे व्रतों के द्वारा हम जीवन को संयमित, सुंदर व स्वस्थ बना सकते हैं। मैंने 20 वर्ष पूर्व ही अणुव्रत स्वीकार किया था। इसके बाद मेरे जीवन में कई परिवर्तन आये हैं। मन में हर बार यह प्रसन्नता रहती है कि मैं कितने पापों से बच रही हूँ। सादगीपूर्ण जीवन जीने का प्रयास निरंतर आगे बढ़ रहा है। जैसे-जैसे उम्र आगे बढ़ रही है, अपेक्षाएं भी कम होती जा रही हैं। मैं स्वयं अणुव्रती बनकर दूसरों को भी अणुव्रती बनने की प्रेरणा दे रही हूँ।

- **रूपा धोका**, छत्रपति संभाजीनगर

अगली परिचर्चा का विषय

कौन है जिम्मेदार? स्वयं प्रकृति या फिर मानव?

- पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है...ग्लोबल वॉर्मिंग!
- मौसम की तासीर बदल रही है...क्लाइमेट चेंज!!
- प्राकृतिक आपदाएँ कहर ढा रही हैं.. इकोलॉजिकल डिजास्टर !!!

कौन है जिम्मेदार?

- स्वयं प्रकृति या फिर मानव?
- क्यों डगमगा रहा है प्रकृति और मानव के बीच का संतुलन?
- क्या है व्यक्तिगत स्तर पर हमारा दायित्व?
- मैं स्वयं इस समस्या का समाधान बन रहा हूँ या कारण?

'अणुव्रत' पत्रिका के मई 2025 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 10 अप्रैल 2025 तक निम्न व्हाट्सएप नंबर पर भेजें।

9116634512

कृपया ध्यान दें – आपके विचार स्वयं अपने अनुभव व संकल्प से जुड़े हों। अनुभवजन्य उद्‌गार उपदेशात्मक बातों से अधिक प्रभावी होते हैं। अणुव्रत का दर्शन भी स्वयं से शुरुआत करने का पक्षधर है – सुधरे व्यक्ति, समाज; व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा!

अणुव्रत समाचार

बाजारों, चौराहों व विद्यालयों तक पहुँचे अणुव्रत : आचार्य श्री महाश्रमण

कच्छ में 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस आयोजित

कच्छ। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में 1 मार्च को अणुव्रत का 77वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आज के दिन परमपूज्य आचार्य श्री तुलसी ने विक्रम संवत् 2005 में सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया था। यह आंदोलन छोटे-छोटे व्रतों द्वारा व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र में नैतिक उन्नयन की बात करता है। अणुव्रत का पालन करने के लिए धार्मिक होना जरूरी नहीं, हर व्यक्ति अणुव्रत को अपना सकता है। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के शुभारंभ के बाद कई क्षेत्रों की यात्राएं कीं। कोलकाता पधारे, दक्षिण भारत में भी पधारे और कच्छ की धरती को भी उन्होंने पावन किया।

आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि आज अणुव्रत की स्थापना का प्रसंग है। अणुव्रत की कई संस्थाएं भी हैं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास जैसी कार्यकारी संस्थाएं हैं। अणुव्रत धर्म स्थानों पर ही नहीं बल्कि जेलों में जाये, बाजारों पर, चौराहों तक जाये, दुकान, ऑफिस, विद्यालयों में अणुव्रत पहुँचे। अणुव्रत हर व्यक्ति के जीवन में आ जाये तो वह सब जगह आ जाएगा। अहिंसा रूपी अणुव्रत जीवन में आये और संयम की साधना रहे। साथ ही तप भी हो। जगह-जगह अणुव्रत समितियां हैं। एक वृहद् नेटवर्क है। राजनीति, शिक्षा, व्यापार हर क्षेत्र में अणुव्रत की आवश्यकता है।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन को पूरे देश में और विदेश में भी एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। इसके प्रति लोगों का रुझान बढ़ रहा है, लोग इससे जुड़ते चले जा रहे हैं। अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने का दायित्व केन्द्रीय स्तर पर अणुविभा के पास है, वहीं स्थानीय स्तर पर अणुव्रत समितियां और अणुव्रत मंच यह दायित्व निभा रहे हैं। जो भी कार्यकर्ता अणुव्रत आंदोलन से जुड़ता है, वह अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है। अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री मनोज सिंघवी ने भी विचार व्यक्त किये।

इस अवसर पर अणुव्रत गीत का संगान किया गया। इससे पहले अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत रैली भी निकाली गयी।

हरित और सतत जीवनशैली से ही पर्यावरण संरक्षण संभव

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) द्वारा पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत गणतंत्र दिवस पर 26 जनवरी को 'आधुनिक दिनों में हरित और टिकाऊ जीवनशैली' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि भारत मौसम विज्ञान विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने कहा कि इस दौर में स्वास्थ्य का मुद्दा बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। रोगों में वृद्धि का कारण प्रदूषण है और प्रदूषण का कारण हमारी जीवनशैली है। डॉ. राठौड़ ने पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों के लिए अणुविभा की सराहना की।

मुख्य वक्ता बीकानेर इंटरडिसीप्लीनरी रिसर्च कंसोर्टियम के निदेशक प्रोफेसर डॉ. नरेन्द्र एन. भोजक ने वेबिनार में शामिल सदस्यों से अनेक प्रश्न पूछे और उनके दिये उत्तर के आधार पर पर्यावरण प्रदूषण के लिए उन तत्त्वों को जिम्मेदार बताया जो लोगों द्वारा दैनिक जीवन में सबसे ज्यादा इस्तेमाल किये जाते हैं।

इससे पहले अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने कहा कि पर्यावरणीय चुनौतियों को हल करने के लिए सामूहिक प्रयासों के साथ ही हमारे व्यक्तिगत जीवन में स्थायी और पर्यावरण अनुकूल बदलाव भी बेहद जरूरी हैं।

अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि आज जिस प्रकार लकड़ी के लिए पेड़ों को काटा जा रहा है, वह आने वाले समय के लिए ठीक नहीं है। पेड़ों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के लिए हमें गहन चिंतन करना चाहिए।

अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि पर्यावरण किताबों और भाषणों का विषय नहीं रह गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि पर्यावरण हमारी जीवनशैली का अंग कैसे बने? हमारी आदतों को हमें छोटे-छोटे प्रयासों से बदलना होगा, तभी पर्यावरण का संरक्षण संभव है।

अणुविभा के उपाध्यक्ष व पर्यावरण प्रभारी विनोद कोठारी ने पर्यावरण जागरूकता सर्वे-2025 के परिणामों की जानकारी दी। अणुविभा महामंत्री मनोज सिंघवी ने कहा कि जब तक हम पर्यावरण को सुरक्षित नहीं रख पाएंगे, हम अपनी भावी पीढ़ी को भी सुरक्षित नहीं रख पाएंगे। वेबिनार में देश-विदेश से 147 प्रतिभागी शामिल हुए। इनमें डॉक्टर, इंजीनियर, एडवोकेट, साइंटिस्ट भी शामिल थे।

अंत में मॉडरेटर जर्मनी के पर्यावरण अभियंता निवेश दुगड़ ने सहभागियों की जिज्ञासा का समाधान दिया। वेबिनार का संचालन डॉ. नीलम जैन ने किया। अणुविभा के पंजाब के राज्य प्रभारी राजन जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सिलीगुड़ी में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन

सिलीगुड़ी। अणुव्रत समिति द्वारा स्थानीय गुरुकुल स्कूल में निर्मित अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन 30 जनवरी को किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री रमेशकुमार ने बच्चों से कहा कि जल ही जीवन है, इसलिए हमें जल संरक्षण और पर्यावरण रक्षा के प्रति जागरूक होना चाहिए।

वाटिका के उद्घाटनकर्ता वरिष्ठ श्राविका हुलासी देवी सेठिया के पुत्र मेघराज सेठिया रहे। कार्यक्रम में अणुविभा के बंगाल प्रभारी विनोद बोथरा, जीवन विभाग प्रभारी पूजा दुगड़, वार्ड 18 के काउंसलर संजय शर्मा, पत्रकार रमेश शर्मा सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। इससे पहले अणुव्रत समिति की अध्यक्ष डिम्पल बोथरा ने अतिथियों का स्वागत किया। गुरुकुल के प्रधानाचार्य अरुणांशु शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

समिति की ओर से गुरुकुल स्कूल में 29 जनवरी को पर्यावरण जागरूकता पर आधारित चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। इसमें बच्चों ने पत्थर पर अपनी कला अंकित की।

डिजिटल डिटॉक्स पर कार्यशाला

खारूपेटिया। अणुव्रत समिति की ओर से तेरापंथ भवन में 21 जनवरी को डिजिटल डिटॉक्स पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। वार्ड कमिशनर प्रिन्सी जैन ने डिजिटल डिटॉक्स कैसे किया जाये - इसके बारे में बताया। अणुविभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने अणुव्रत आचार संहिता के ग्यारह नियमों और अणुविभा द्वारा चलाये जा रहे प्रकल्पों की जानकारी दी। अणुविभा के आजीवन सदस्य डॉ. धनपत लुनिया और गाजियाबाद अणुव्रत समिति की अध्यक्ष कुसुम सुराना ने भी विचार व्यक्त किये।

राष्ट्र के उत्थान में अणुव्रत की सार्थकता

गुवाहाटी। अणुव्रत समिति द्वारा 'राष्ट्र के उत्थान में अणुव्रत की सार्थकता' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन 26 जनवरी को तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। इसमें आस्था नाहटा ने प्रथम, संगीता बैद ने द्वितीय एवं मनोज संचेती ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मंडल में सरिता सांखला एवं डॉ. सारिका दुगड़ थीं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अणुविभा की उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया, कार्यकारिणी सदस्य छत्तरसिंह चौरड़िया एवं आजीवन सदस्य डॉ. धनपत लुनिया उपस्थित थे। समिति अध्यक्ष बजरंग बैद ने सभी का स्वागत किया। मंत्री संजय चौरड़िया ने समिति की गतिविधियों की जानकारी दी।

साइकिल रैली से दिया नशामुक्ति का संदेश

हिसार। अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत संकल्प यात्रा के तहत 10 फरवरी को नशामुक्ति साइकिल रैली निकाली गयी। शासनश्री साध्वीश्री यशोधरा, साध्वीश्री परशंमरति, साध्वीश्री सरोज कुमारी, साध्वीश्री प्रेमलता, साध्वीश्री डॉ. शुभप्रभा से पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रैली निकाली गयी।

रैली महाराजा अग्रसेन चौक स्थित इग्नाईट स्पोर्ट्स से रवाना होकर बगला रोड, बाईपास होते हुए वापस महाराजा अग्रसेन चौक पहुँचकर संपन्न हुई। राइडिंग क्लब के सहयोग से 40 किलोमीटर क्षेत्र में निकाली गयी साइकिल रैली के दौरान पोस्टर-बैनर के माध्यम से आमजन को नशे से दूर रहने का संदेश दिया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. अरूण अग्रवाल व निशांत मेहता ने युवाओं से आह्वान किया कि वे नशे से दूर रहकर रचनात्मक व सकारात्मक कार्यों में अपनी ऊर्जा को लगाएं और समाज व देश के विकास में अपना भरपूर योगदान दें।

समिति अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल ने कहा कि हम सभी का दायित्व है कि युवाओं में बढ़ती हुई नशे की लत को खत्म करने के लिए अपना हरसंभव योगदान दें। रैली का मार्गदर्शन डॉ. महेंद्र सिंह व डॉ. सतेंद्र यादव ने किया।

विद्यार्थी-चरित्र निर्माण अभियान

जयपुर। अणुव्रत समिति जयपुर के बैनर तले 'विद्यार्थी-चरित्र निर्माण अभियान' के तहत 27 जनवरी को घी वालों के रास्ते में स्थित श्वेताम्बर सीनियर सेकण्डरी स्कूल में आयोजित 'अणुव्रत जीवन विज्ञान कार्यक्रम' को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री तत्त्व रुचि तरुण ने कहा-''स्वस्थ समाज के लिए सुसंस्कारी बच्चों का निर्माण करना बेहद जरूरी है।'' इस मौके पर छात्र-छात्राओं ने चरित्र सम्पन्न बनने हेतु वर्गीय विद्यार्थी अणुव्रत नियमों की शपथ ली। कार्यक्रम का प्रारम्भ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। स्कूल प्रिंसिपल दिनेश कुमार गुप्ता ने स्वागत एवं आभार प्रकट किया। अणुव्रत कार्यकर्ता नरेन्द्र चिण्डालिया ने अणुव्रत कार्यक्रमों की जानकारी दी। अणुव्रत पट्ट, साहित्य एवं अणुव्रत कैलेण्डर स्कूल को भेंट किया गया।

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अब बढ़े हुए पृष्ठों के साथ!

हिन्दी के साथ-साथ अब बच्चों को पढ़ने को मिलेगी अंग्रेजी भाषा में भी कहानियाँ।

अणुविभा

चिल्ड्रन'स पीस पैलेस

राजसमंद

प्रकृति की गोद में
अनुभव करिए
शान्ति के स्पंदनों
को...

एक बार अवश्य देखिए...

सम्पर्क सूत्र

राजसमंद
+91 911 66 34513, +91 992 85 08098

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

पोस्ट बॉक्स संख्या - 28, राजसमन्द (राजस्थान)
- office@anuvibha.org
- www.anuvibha.org
- www.facebook.com/anuvibha.page

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

'अणुव्रत'
पत्रिका

प्रकाशन के **70** वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश'
पत्रिका

प्रकाशन के **25** वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िये

अवधि	'अणुव्रत'
1 वर्ष	₹ 800
3 वर्ष	₹ 2200
5 वर्ष	₹ 3500
योगक्षेमी (15 वर्ष)	₹ 21000

'अणुव्रत' पत्रिका हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA
BHARATI SOCIETY
CANARA BANK
DDU MARG, NEW DELHI
A/c No. : 0158101120312
IFSC Code : CNRB0000158

अवधि	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	₹ 500
3 वर्ष	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 2100
योगक्षेमी (15 वर्ष)	₹ 15000

'बच्चों का देश' हेतु बैंक विवरण
ANUVRAT VISHVA
BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Branch Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100